सूर्यारोहण

महेन्द्र प्रसाद सिह की चुनी हुई
ताजा कविताओ का विशिष्ट सग्रह

महेन्द्र प्रसाद सिह

शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली

सूर्यारोहण / कविता-संग्रह / महेन्द्र प्रसाद सिंह

प्रथम संस्करण, 1986

प्रकाशक
शारदा प्रकाशन, 16/एफ 3 असारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002

विजयदेव झारी द्वारा शारदा प्रकाशन के लिए प्रकाशित एवं हरिकृष्ण प्रिंटर्स दिल्ली में
आवरण सज्जा श्री विपिन शर्मा एवं आवरण मुद्रण गणेश प्रेस दिल्ली द्वारा ।

मूल्य
40 00

Suryarohon (Collection of Hindi Poems) by
Mahendra prasad Sin h

आत्मज राजेश को
जिसके आकस्मिक अनुरोध पर
मेरी कविता का पुनर्जन्म हुआ
और
मुन्नी,
सीमा, नीता, और सुनीता
तथा प्रथम श्रोताओं और पाठकों को

—महेन्द्र प्रसाद सिंह

भूमिका

डॉ० महेन्द्र प्रसाद सिंह एक राजनीति वैज्ञानिक हैं। इसीलिए उनकी दृष्टि मे जहाँ समाजशास्त्रीय पैठ है, वहा वैज्ञानिक व्यवस्था भी विद्यमान है। उनकी काव्य-संवेदना के ये दोनो ही गुण निरन्तर दिखाई देते हैं—एक ओर तो वे समाज म चलन वाले आस्था-अनास्था, सृजन-सहार, आशा-आशका के द्वन्द्वो के तनाव को झेलते है तथा दूसरी ओर जीवन मे एक सन्तुलन, व्यवस्था एव मर्यादा की कामना भी करते हैं उनकी सौन्दय चेतना को समझने के लिए इन दोना बातो का समझना जरूरी है

प्रस्तुत कविताएँ विचार प्रधान हैं—अधिकांश तो वस्तुत विचार कविता के अन्तगत रखी जा सकती हैं। यह स्वाभाविक भी है शास्त्रीय प्रशिक्षण ने महेन्द्र को एक विचारात्मकता दी है, तर्क की तेज धार पर स्थितियो को परखने की शक्ति दी है उनकी कवि दृष्टि सतह पर ही सचरित नही होती—कही गहरे जाकर जीवन की आदिम आकाक्षाओ एव अहत्ताओ का अन्वेषण करती है। इसीलिए इस सकलन का नाम 'सूर्यारोहण' है अधकार एव प्रकाश ने जीवन को आदिम चरण से ही घेर रखा है—ये आदिम सस्कारो के निर्माण करने वाले आद्यबिम्ब हैं प्रकृति मे निरन्तर अधकार और प्रकाश का जो द्वन्द्व चला करता है वह जीवन मे चलने वाले द्वन्द्व का ही प्रतिरूप है इसीलिए जीवन के समूचे द्वन्द्व की सघनता एव जटिलता को व्यक्त करने के लिए कवियो ने अधकार और प्रकाश के बिम्बो का उपयोग किया है हिन्दी कविता के इतिहास मे यह द्वन्द्व अनेक रूपो मे अभिव्यक्त हुआ है इस दृष्टि से भक्तिकाल एव आधुनिक काल की कविता विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है भक्ति काल की कविता म तथा छायावाद तक आधुनिक काल की कविता म प्रकाश को ही विजेता के रूप मे प्रतिष्ठित किया गया है मगर छायावाद के बाद एक युग आता है जब कविता अधकार, निराशा, अनास्था कुण्ठा, सहार की अभिव्यक्ति तक सीमित होकर रह गई—जब कविता मे प्रकाश की व्यञ्जना करना भी वर्जित माना जाने लगा ऐसी स्थिति मे यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही था कि क्या मात्र निषेध, अनास्था एव विघटन से महान कविता का सजन सभव है? मगर यह स्थिति देर तक नही रही और कविता फिर मे

भाव की ओर, आस्था एव निर्माण की ओर उन्मुख हुई और यह तभी सभव हो सकता है जब अनास्था एव ध्वस की भयानक शक्तियो का स्वरूप पहचाना जाए उनकी शक्ति एव सीमा का बोध हो जाए तथा उनकी चुनौती को प्रखरता के साथ स्वीकार किया जाए एसी कविता ही पूण कविता कहला सकती है महेन्द्र की कविताओ की सवेदना इस पूणता को व्यजित करती है पूणता की इस व्यञ्जना मे वक्रता एव शक्ति के विकास की स्थिति एव सभावना बराबर इन कविताओ मे लक्षित होती है किसी भी कवि के प्रथम काव्य-सग्रह मे ऐसी स्थिति का पाया जाना स्वाभाविक ही है

विषय का विस्तार एव ताजगी इन कविताओ की एक ऐसी विशेषता है जो सहज ही पाठक को आकर्षित करती है राजनीति विज्ञान के प्रशिक्षण ने कवि की चेतना को नए सामाजिक-आर्थिक वैषम्य के खतरो से, नए एव भयानक हथियारो की विनाशक शक्ति के आतक से आगाह किया है अधकार की शक्ति कितनी दुद मनीय हो उठी है, यह बात बराबर कवि की सवेदना को आतकित प्रोत्साहित करती रहती है इसके विरोध म प्रकाश का स्रोत है, जिजीविषा—मनुष्य की वह सहज चेतना जो निरन्तर विकास की ओर अग्रसर रहती है कवि ने जीवन एव माटी की इसी जिजीविषा को प्रकाश के प्रखर रगो से चित्रित किया है

भाषा का नयापन, उसकी सादगी उसकी शक्ति भी ऐसे गुण हैं जो इन कविताओ को विशिष्ट बनाते हैं एक अथ मे महेन्द्र की ये आरम्भिक कविताएँ है (अर्से पहले लिखी गई कविता और आज की कविता के अन्तराल को यदि नजर अन्दाज़ कर दें तो) मगर साथ ही ये एक प्रौढ व्यक्तित्व की कविताएँ भी हैं इसीलिए ये कविताएँ एक युवा कवि की रचनाओ से भिन्न हैं इनकी रचनाधर्मिता मे दृष्टि का विस्तृत परिप्रेक्ष्य समाहित है जो राजनीति विज्ञान की लम्बी साधना से महेन्द्र को प्राप्त हुआ है अनेक कविताओ म भाषा की प्रतीकात्मकता एव बिम्बात्मकता अपनी नवीनता मे आकर्षित करती है साथ ही ऐसी कविताएँ भी हैं जिनकी भाषा गद्यवत सहज और साधारण है एक प्रतिनिधि सकलन म ये सभी तेवर लक्षित होने चाहिए—यही सोचकर इन्हें रखा गया है

महेन्द्र ने अपनी सभी रचनाओ म से कुछ रचनाएँ चुनी और फिर मुझे देखने को

दी इन कविताओ के चयन मे मेरा निणय उनसे सहमत रहा है मगर यह कह-कर मैं अपने निणय के दायित्व से मुक्त नही होना चाहता—यह निणय मेरा भी है और मेरा ही है क्योंकि अन्तिम निणय का अधिकार मुझे ही दे दिया गया था इसलिए पाठको को लग सकता है कि ऐसे सकलन की भूमिका लिखते हुए मैं अपने ही निणय का औचित्य सिद्ध कर रहा हू या उसका ही मूल्यांकन कर रहा हूँ एक अथ मे ऐसा सोचना ठीक भी है लेकिन असली सवाल कवि की समूची रचनाधर्मिता के विश्लेषण मूल्यांकन का है—कविताओ के चयन मात्र का नही मस्तिष्क की जो प्रौढता, दृष्टि का जो विस्तार, अभिव्यक्ति का जो खरापन इन कविताओ मे लक्षित होता है उसे देखकर हमे महेन्द्र की सजन-क्षमता की विशिष्ट सभावनाएँ भी लक्षित होती हैं ये कविताएँ जितनी उपलब्धि हैं, आपके सामन हैं, ये कविताएँ जितनी सभावना है, उसे कवि को ही साकार करना है

तारकनाथ बाली
आचाय हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

आमुख

मेरी कविता का जन्म किशोर सुलभ सपनो मे हुआ था, और उसका पुनर्जन्म यथार्थमूलक भावनाओ के विस्फोट में हुआ है इन दोनो घटनाओ के बीच दो दशाब्दियो का अतराल है

मेरी ये कवितायें हिन्दी कविता, अथवा मात्र कविता, को किन धाराओ से अपना सबध जोडेंगी, मैं नही जानता बचपन मे पारिवारिक पुस्तकालय मे 'चाद' (इलाहाबाद मासिक, अब बद) की पुरानी फाइलो से आधुनिक हिन्दी कविता से हलका सा प्रथम परिचय हुआ बाद मे, पाठयक्रमो के माध्यम से हिन्दी साहित्य से अनिष्णात साक्षातकार हुआ फिर, स्वपठन से, अधिकांशत दिनकर और बच्चन, तथा न्यूनाशत प्रसाद, पत, पडित मोहनलाल महतो वियोगी और आरसी प्रसाद सिंह की कविताओ से आशिक परिचय हुआ और, इसके बाद, कविता की वापसी' के विवाद के स्फुट स्वर सुने अहिन्दी कविता से मेरा परिचय नाम मात्र का है अस्तु 'सूर्यारोहण' हिन्दी कविता के साथ सतुबध का मेरा विनम्र प्रयास ही समझा जाना चाहिये

इन कविताओ म मेरे व्यक्तिगत और देश तथा काल के व्यापक सघर्षों की प्रतिध्वनिया हैं मैं स्वभाव से अतर्मुखी-व्यष्टिवादी हूँ, किन्तु परिवेश से समष्टिवादी हूँ, प्रकृति से कवि पर प्रशिक्षण से राजनीति विज्ञानी हूँ इन विरोधाभासो के अत्याचार से मैं आक्रांत रहा हूँ राजनीति विज्ञान मे आरभ मे मैं ब्रितानी चिंतक हैरॉल्ड लास्की से प्रभावित हुआ बाद मे, अमरीकी पद्धति प्रकार्यात्मक सिद्धातो के प्रभाव मे आया राजनीतिक विश्लेपण की इन दो परपराओ के बीच दोलित, और कभी इनके कशमकश मे उन्मीलित, मेरे मानस को, प्रकारातर से, अमरीकी मनोविश्लेपनात्मक इतिहासकार एरिक एरिकसन तथा ब्रितानी राजनीतिशास्त्री माइकल ओकशॉट से आंशिक उपशम मिला है 'सूर्यारोहण', कम से कम अशत, इन तनावो के बीच मेरे समाधानो की एक काव्यात्मक उत्पत्ति है

प्रस्तुत रचनायें कविता और राजनीति विज्ञान के मृण्मय पुलिना पर लिखी गयी हैं राजनीति विज्ञान के स्वरूप के सबध म मेरी धारणा रही है कि यह यह केंद्रस्थ मानसरोवर है जो अथ, ज्ञान, और व्याख्या के सधान म, विभिन्न सामाजिक और व्यावहारिक विज्ञाना के साथ-साथ दर्शन, साहित्य, ललित कलाओ आदि तमाम श्रोता स अन्तर्धारायें आत्मसात करता है और सजना के माध्यम से ऋणमुक्त हाता है मेरे लेखन क साथ-साथ मेरी कविताओ पर भी इस धारणा की छाप है इसस अनुमान होता है कि सूर्यारोहण' का पाठयवृत्त बहुत सीमित नही होगा लेकिन इन कविताओ म कुछ काणिक रुक्षतायें हैं जो शायद कुछ लोगो को पसद न आयें किसी ज्यादा उपयुक्त शब्द के अभाव मे मैं उन्हें 'अकविता' के तत्त्व कह रहा हूँ य तत्त्व मुझे वहाँ दीखते हैं जहाँ कविता आनद की सीमा पार कर ज्ञान की तलब करे, असक सुलभ आयातित तत्त्वो का सहारा ले, जीवन के विद्रूप का पदय और लास्य से रिक्त हो भार वाही गधक-सा ढोय या अथ की सीमा क परे प्रतीत हो पर जो अज्ञात ही सही, मेरा 'सत्य है उससे मैं विमुख कसे हो लू !

अपनी सर्जना की प्रक्रिया के उदाहरण के रूप मे 'सूरजमुखी' के प्रतीक के अपने काव्यात्मक अनुसधान की चर्चा करूँगा यह प्रतीक मेरे मानस और वातावरण की भूलभुलैया की बुनियाद से निकला है जब मैं बिहार म था तो कभी अपने आँगन मे सूरजमुखी का एक सुलक पौधा लगाया था, और तभी से उसके प्रकीण, प्रचुर सहजाकपण से बिद्ध हो गया हूँ पारिवारिक, मैत्रिक और मात्र दृष्टि की परिधि मे अनेक सूरजमौखिक स्त्रीण छवियाँ मेरे मानस के कैनवास पर चित्रांकित होती रही हैं साथ ही कांग्रेस पार्टी मे 1969 के विभाजन पर शोध के दौरान इंदिरा नेहरू गाँधी के व्यक्तित्व और व्यवहार के अध्ययन के माध्यम से उन छापो का जैसे चित्रवधन और उत्कीणन हुआ इन तरह, धीरे धीरे और अज्ञात रूप से, सूरजमुखी की मेरा विशुद्ध चाक्षुष चेतना पर भावनात्मक तथा बौद्धिक परतें निक्षिप्त होती गयी

इसी तरह मेरी कविताओ की नयी फसल मिथको तथा कलात्मक, ऐतिहासिक, और वैज्ञानिक अनुभूतियो के कुशाग्रो से भरी हैं य जलती अगरबत्तियाँ हैं जो अथ की सुगध शनै शन बिखेरती हैं मेरी श्रेष्ठ कवितायें वे हैं जिनका लिखना एक मादक अनुभव रहा है—जसे मेघा के सपुट मे वसतानिल मे तरते सिहरन भर देने वाली कल्पनाओ और तरगो के फूल बीनता फिर रहा होऊँ ! रचना के

समय मैं अपने आविष्ट मस्तिष्क को पूणत उन्मुक्त छोड देता हूँ—अगर इस प्रक्रिया का उपर्युक्त सजनात्मक स्वरूप असदिग्ध है—जिससे वह मेरे मानस के दूर प्रकाश्य और अध कोनो और सलवटों का पयटन कर उनमे छिपे तत्वो को आविष्कृत कर सके इस प्रक्रिया से उपजी रचना मे प्राय काल, स्थान और व्यक्ति की तद्रूपता क्षत विक्षत हो जाती है लेकिन, कम से कम, मैं वह अभिव्यक्त कर पाता हूँ, जो कम से कम भावना के स्तर पर, मेरा अनुभूत सत्य है लिखते या बाद मे पढते समय मुझे, विशेषत अपनी बडी कविताओ मे, बिंबो, प्रतीको, और अनुभूतियो का ताडवी प्रपात, विचारो और भावो की क्रमश विशाल होती गगा मे, प्रवाहित होता प्रतीत होता है, ये सभी तत्व आपस मे एक प्रयोगात्मक और सौंदयमूलक मिश्रण के लिये धकियाते से एक जुलूस की शक्ल मे गुजर जाते हैं कभी कभी कोई बिंब मुझ पर इस तरह हावी हो जाता है कि कविता विशेष की रूपरचना के साथ साथक मेल न होने पर भी मैं उसे काव्यात्मक रूप से बांध लेना चाहता हूँ जिससे कविता मेएक अविश्लेष्य रहस्यमयता का ततुजाल छा जाता है लेकिन मैं मात्र अथ के लिय उससे विदाई के लिये अपने को तैयार नही कर पाता सुधी गोताखारो को अथ के इन प्रवालद्वीपो से लाल लहरें उठती दीखेंगी, और बहुआयामी सदर्भों मे विपुल ध्वनियो और पारदर्शी बिंबो का 'आरकेस्ट्रेशन' होता प्रतीत होगा

उपर्युक्त पष्ठभूमि मे सोचते हुए मुझे लगता है कि सभव है 'सूर्यारोहण' हिन्दी कविता मे किंचित नयी प्रवत्तियों का, अथवा कम से कम किन्ही पूव प्रवृत्तियों के पुनर्जागरण का, द्योतक हो, और इस कारण (अगर अन्य किसी कारण से नही) समालोचना के किन्ही नये मानदडो की अपेक्षा करे अमरीकी कला आलोचक हैरॉल्ड रोजनबर्ग के विचार मे नव्य का नव्य के रूप मे गुणग्रहण के लिये रूपाकृति और सौंदयबोध के मान्य मूल्यो का उल्लघन अनिवाय है

दिल्ली विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तारकनाथ बाली के प्रति मैं सूर्यारोहण का विद्वत्तापूण भूमिका लिखने के लिये हृदय से आभार व्यक्त करता हू। उनकी सलाह पर मैंने परिशिष्ट म कुछ टिप्पणियां जोड दी हैं जो पाठको के लिये उपयोगी सिद्ध होगी

इस पुस्तक के प्रकाशन में डॉ० सुरेश गौतम तथा आत्मज राजेश का (आवरण की अभिरुचि, सलाह और सहायता के लिये) मैं आकठ ऋणी हू

सीमित समय की बाधा के बावजूद संकलन का प्रकाशन संभव करने के लिए शारदा प्रकाशन के व्यवस्थापक मेरे विपुल धन्यवाद के भागी हैं

आमुख का समापन अपनी एक अप्रकाशित कविता 'मधुमास' (1983) से करना चाहूंगा

चेतना के मधुमास में
गत सीमित और अनागत विस्तीर्ण हुआ जाता है
प्रकृति और प्रवृति के पराक्रमी प्रभंजन में
सीमांत और मर्मांत एकाकार हो रहे हैं
टनेल के उस पार
जब अरुणाभ उदय होगा
तो सूरजमुखी, गुलाब और हरसिंगार से
दिगंत लदा होगा
कोहरा और तुषार पर
नव शिख प्रफुल्ल अमलतास खिला होगा

सी 11/11 माडल टाउन, दिल्ली 110009 — महेन्द्र प्रसाद सिंह

कविता-अनुक्रम

पुरातन और नूतन वज्र का संघर्ष बोला
विभा सा कौंध कर भू का नया आदर्श बोला
नवागम रोर से जागी बुझी ठंडी चिता भी
नयी शृंगी उठा कर वृद्ध भारतवर्ष बोला।

—रामधारी सिंह दिनकर हुंकार

परिपूर्ण श्रृंग

मेरा अनमन प्राय प्रकृति को सस्कृति पर
तरजीह देता आया है
पर सस्कृति एक अथ मे श्रेष्ठ है
प्रकृति का आदिम सतुलन
अराजकता की सर्वग्रासी अग्नि मे जन्म लेता है,
जब कि सभ्यता और सस्कृति मे
कुमुद और कमल दोनो वरेण्य है
साध्य और साधन के विवाद मे प्रकृति नही पडती
पर कोई सभ्यता भी नही
जिस मे साध्य के लिए साधन का अपहरण नही हुआ हो
(बल्कि कभी तो दोनो ही का),
या धृतराष्ट्र की अधता का जवाब
गांधारी की स्वारोपित अधता से न मिला हो,
क्योकि धर्म और आपद्धम की विभाजक रेखा
भग्नात्मक शतदल सा अंतराली नही,
अधनारीश्वर आलिगन है

सपूण सस्कार क्या मात्र आकाश कुसुम है ?
मात्र ऐकातिक समाधि या एकल यात्रा है ?
विक्षिप्ति है ?
पाखड है ?
जो व्यक्ति-स्तर पर प्राप्य है
क्या समष्टित मात्र मरीचिका है ?
अथवा समाज के सकेंद्रित परिधियो के बाहर
व्यक्ति या तो असभावना है
या हिंस्र विलगाव ?
पर सकेन्द्रत और समन्वय का स्वरूप क्या हो
जिसमे भिन्नताओ के लाघवो का ही लास्य हो ?

ग्रथिल लाघवो पर शायद सहमति दुर्लभ न हो,
पर शायद उतना आसान भी नहीं
वात सिर्फ भिन्न छायाओ में विश्रांति करते हुये
भिन्न मार्गों से एक मजिल तक पहुँचने की नही है,
हर मजिल एक हद तक
अपना मार्ग भी निर्धारित कर देती है ,
और विकल्प भी सदैव पूर्णत ऐच्छिक नही होते
एक सीमांत के वाद दूसरा सीमांत खुलता जाता है,
पर विजित सीमांत कभी जन-सकुल होता है,
तो कभी गैर आवाद महावन,
कभी सात समुन्दर पार, तो कभी मानससिंधु मे तैरता तृण,
कभी अनुवर सोम,
तो कभी कोई अन्य अज्ञात-कुलशील ग्रह
तथा मजिल और मार्ग भी परस्पर प्रभावी हैं
कभी तो हम कलमी रोपण कर सकते हैं,
तो कभी मात्र वृततराशी
पर समन्वय के बिना उत्तरजीविता कहाँ ?
साराशत , साध्य, साधन और साधक अविच्छिन्न त्रिशूल हैं,
जिसपर नूतन सामासिक सस्कृति की
धर्म निरपेक्ष काशी अवस्थित है-

वालू के टीले हो या प्रलयावशेषी काछारी भूमि,
समय की हल रेखाओं मे
सभाव्य अतिमानवीयता के बीज बोते चलो

अग्निकमल

जहाँ जहाँ आग मिले
दौड़ो और अंगीकार करो
तिल, तिलि, स्फुलिंग, अश्वपेशियाँ,
तंत्र, यंत्र, वड़वानल, दावाग्नि, जठराग्नि, चक्रवात,
जुगनू, उल्का, त्रिनेत्र,
तल, गैस, विद्युत, नाभिकाणु—
इन सबो के संचित विस्फोट से ही तो
अग्निमानस सूर्य की रचना हुई है !

कहते हैं सूर्यारोहण के प्रयास में
संपाति के पंख जल गये
फिर मारुति ने मधुर फल जान कर
सूर्याहार कैसे कर लिया था ?

सौर ऊर्जा के अन्वेषको—
सूर्यसंगीत का नाद तेज करो
उत्तरायण के पहले ही
एक प्रचंड सूर्य विस्फोट करो
हम ब्रह्मांड का मूल हिलाना नही चाहते,
लेकिन सौरमंडल को रचनाधर्मिता पर
विरामबिंदी भी मुझे अस्वीकार्य है।

समन्विति का सुमेरु

मैं निश्चेतन नही हूँ,
सूर्य-सा निधूर्म भी नही,
मैं दावाग्नि हूँ
मेरी अग्नि मे मैं और मेरे अपने ही जलते हैं
चाँद मे जो कलक दीखता है
वह वस्तुत दावाग्नि की धूम है
पर यह कालिमा
कालातर मे
लब्धियो का नियाग्रा बन जायगा
क्योंकि जो आज धूम दीखता है
वह कल सयोजन और समन्विति का सुमेरू बन प्रकट होगा

खडित चेतनाओ की
अनगढ रूक्ष शिलायें यत्र-तत्र बिखरी हैं,
इनमे चडीगढ के शिला उद्यान की
सवाक् सरचना का स्वप्न आत्मा सा अमर है
मेरी क्षार से एक अधनारीश्वर शक्ति उठेगी
और सार्विक सुष्ठु राजीव की सुखानुभूति बन जायेगी

चितन और क्रिया की अन्विति के लोप से
दीपशिखा की लौ मद्धिम पड जाती है
और पराक्रम के पद्मनाभ का छत्र नत हो जाता है

अमल उदय

एक मास के अदर ही
सूर्य और चद्र दोनो ग्रहणो का सयोग !
पर तुम्हारा कोप अनत है

कुछ किरणें उधार दे दो—
मुझ मे जो किरण दम तोड रही है
वह दिन-प्रतिदिन प्रकट नही होती

सोम की किरण सभवा दीप्ति से हतप्रभ हो
दोनो ज्योतिपिंड
उदयास्त वर्णराशि मे
जा छिपे हैं
इस मूर्तमान उदय मे
सघन अधकार का मानमर्दन कर
उसे शिखा—सहयोगी बना लेने की क्षमता है
ज्योतिपर्व के अनन्य अरुणोदय की अर्चना मे
मैं पाचजन्य फूकता हूँ
अधकार और प्रकाश के
सघर्ष और सहयोग पर
विधाता की सृष्टि टिकी है
और समुद्रमथन देवासुर सग्राम का पूर्वा,भास है
पर विजेता किरण
काजल की कोठरी से सदा
बेदाग निकलती है

गरुड

आक्रमण की भजक विभीषिका के बाद
नगर के ध्वस्त अवशेष
स्तब्ध, सज्ञा शून्य बिखर गये
मलबे से एक मृतप्राय पक्षी
आहत पखों पर
निराश्रित नीड को उठाये उडा
और उडता ही चला गया

उसकी जिजीविषा ने
स्वेद, पय, और विक्रमी आकाक्षाओ की
त्रिवेणी प्रस्रवित की,
परपरा के पख और परिवर्तन के चक्र को
सार्वजनीन सवेदना का वाहन बनाया

व्योम मे पख पसारे
गरूड गतिमान है,
पर शून्य का अत नही दीखता
सुअक्ष्य ग्रहों की अभीप्सा
भूमि और सेतु-सीमित मानव के लिये
जीवन-मरण का प्रश्न है
शतरूपा रेवति का मन मयूर तो अशेषपाखी,
पर तन सीमित है

कषण और उत्खनन ने
धरणि और मोहिनी को
गत प्रनूतन-प्राय बना डाला है
पर्यावरण के सतुलन और प्रलबन के

चक्रव्यूह मे घँसा मानव,
देखना है,
अंतरिक्ष-मथन से
किन मूल्यो और अर्थों का
उदय करता है।

अवतार

यह कैसा विलक्षण पोत है
जिसकी प्लावन और धरती पर
समान गति है
नरम-गरम, नगर-गांव, काल-प्रदेश अनुकूलित
यह स्वराजी समाजवादी पोत
असरय कुंभो, अद्धकुंभो और नवनिर्माणो का साक्षी है

यह विक्टोरिया और चमडे का सिक्का,
दरबार और ससद सब देख चुका है,
द्विजो और अछूतो को एक साथ बिठा कर
सार्विक सविधायन और विधायन
करा चुका है
भीष्म की तरह
प्रतिपक्ष को
प्राम पदालब (और सत्ता भी) दे चुका है

कुछेक वर्षों के लिए
इसकी एक अलग कनिष्की छाया उभरी थी,
किन्तु शीघ्र ही
नगाधिराज का
पुन महामस्ताभिषेक हुआ
काग्रेस सगठन नही, सस्था और सस्कृति है
इसकी सवद्वद्वात्मक सामासिक विचारधारा मे
देशावतारी शक्ति है

वैदेही

भारत में अभावमेध का यज्ञ चल रहा है
धनदला वसुधरा और सहस्त्रस्रोती जाह्नवी के पास
हर आवश्यकता पूर्ति का साधन है,
हर कोने में चमन का हो या न हो,
प्रणति में सिर झुकाओ,
राजा जनक ने स्वयं हल की मूठ पकड़ी है
जब सम्राट हलवाही करता है
तो श्रीमूला वैदेही प्रकट होती है

केंद्रस्थ

मुझे केंद्रस्थ करो
तटो और निर्माणाधीन पुलो के सतही अस्तित्व से
मैं बेजार हूँ
अलाव को पभाओ आग-सा जीना
या कगारू सा कांगडो छिपाये फिरना
अग्निशिखा से बेवफाई है
मैं हिमवान और हसो की धवल
गरिमा कहा से लाऊँ ?
मैं कठोर भूगर्भ से निकला लोहा हूँ—
मुझे धमन भट्टी मे डाल
तरल इस्पात बन जाने दो
मैं बर्फ की चादर से सद्य अवतरित
प्रशाद्वल वनराशि हूँ—
मैं धूप और कृषाणु मे
अनिल-स्नान करूगा
विचित्र सयोग है—
महासागर हिमश्वेत शतदल की छाया मे
दम ले रहा है,
और मैं उसे अग्निपाखी पर उड्डीन
अखड मडलाकार चक्रसुदर्शन के
अग्निआलिंगन मे देखना चाहता हूँ!
नक्षत्रमडल की दावाग्नि मुझे आत्मसात कर ले
मैं क्षार से अमरपाखी गरूड बनूगा

प्रतीक्षिता

जो कुछ जहाँ है वही थम गया है—
खिडकी के मुक्त कपाट के
पल्ले से जकडा कपोत,
खुले दरवाजे पर तिरछी पडती
क्वार की धूप का शहतीर,
पन्नो पर जबरन गडी
और पल-पल उठती आँखें
तथा घडी की पथरायी बाँहें
आसमान भी आज किंचित् धूमिल है,
मेघदूतो की तैरती पाँतें भी
आज सात्वना देने नही आयी
ऐसे मे सिहरते प्राण भी
कब तक साथ देते !
शाम होते-होते मैं भी पथरा गया

फिर कुछ भी दिल न बहला सका—
न बीते दिनो की छायाओ से आकस्मिक मुलाकात,
न भविष्यत् की सुनहली झाँकी,
न चलचित्र पट पर भीड का पूर्वाग्रही अपतत्रक उन्माद,
न प्रतीक्षिता की दिवास्वप्निल भ्रामक झलक
मेरी चेतना तो कच्छप-सा सिमट कर
आज और अभी पर केंद्रित हो आयी है
अनागमन तिकोने भाले सा गड कर
मुझे साल रहा है

युगान्तर

मेरे मेघदूत सक्षिप्त थे
क्योंकि उस दिन आसमान नीला था
पर वे तुम तक मर्मातिक प्रतीक्षा
और विस्तरणशील यात्रा को भग कर पहुँचे थे
महानगर से महानगर की यात्रा मे
उन्होने कदलीवनो और स्वणतालो का
हरिताभ पवतो मे विलय देखा था,
क्षितिज पर धरती और आकाश का सगम देखा था,
यमुनातट के प्रणयकुज देखे थे,
और गुलाबी राजनगर मे अपना रैन बसेरा बनाया था

तुम्हे जानना स्वय को खोने-सा
त्रासद पर उन्मादक रहा है—
ऐसा सग्राम जिसमे आत्मरक्षा को
मैंने तिलाजली दे दी है
शायद इस लिये
कि मैं आश्वस्त हूँ
कि तुमसे हार कर भी
मैं अपराजित हूँ—
शैवाल मे खो कर भी
मेरी अग्निधारा युगातरो तक जीवित रहेगी

पूर्णमासी

चदन तरुवर नागपाश से मुक्त हो गया है
स्कधशाख पर मादक पूर्ण कलाधर खिला है,
और सवत्र रहस्यमय चादनी खिली है
कुजो मे डोलती प्रेतछायायें लुप्त हो चुकी हैं
अगाध नैशछवि दिगत पर बिखरी है

दिक्काल की खाई और बढती जाती है
त्वरण से दिग्विजय तो सभव है,
पर काल तो पल-पल और विशाल होता जाता है
काल खडो को
कभी ऐसे तो कभी वैसे व्यवस्थित करो,
कोई फक नही पडता
धपबत्ती आगमन की प्रतीक्षा मे
तिल तिल जल रही है
क्या ग्रहो और नक्षत्रो की गति तेज करने मे
हम इतने निरुपाय हैं !

काफिले मे शामिल कर लो

मैं गिरिधर हूँ
या टिटिहरी जो पैर से आकाश थामे सोती है—
नीली छतरी कही गिर न जाय ।
चैन की वशी का सपना
सप्ताश्व की बागडोर के दु स्वप्न मे बदलता जा रहा है

मैं सागर हूँ
या मानसर जिसमें सैलानी निर्भय नौका-विहार कर जाते हैं ।
अज्ञात कूल-किनारो से आकर
परिंदे जल-किल्लोल कर जाते हैं ।
जब जब जल पथराने लगता है
इनके आगमन से
हिम-नील पुलिना झील का रसायन
कज्जल हो जाता है ।

मैं कच्छप हूँ,
मेरी गिरा गूढ और दूरगामी है
सागर मे डूबता-उतराता रहता हूँ—
तल मे कच्छप और वारुणी-तटो पर
धनुपकोटियो के मध्य बालारुण
मुझे अतलतल में डूबने से बचा लो
इस बार तुम्हारा स्वर मुझ तक देर से पहुँचा,
पर उसने मुझे योगस्थ ही पाया—
नासदीय शून्य से सविता और सृष्टि के विस्मय मे ध्यानस्थ

मैं हिमहेम शिखर हूँ
या सतप्त मरुस्थल,
जिस पर काफिले गुजरने लगे हैं।
मुझे जनारण्य मे भी निर्वासन दे सको
तो काफिले में शामिल कर लो

हिमालय—गंगा से

हम एक सुनियोजित साजिश के
शिकार हो गये हैं—
हम एक थे,
पर अब निरंतर परस्पर दूर होते जा रहे हैं
मेरे प्रशांत चित्त की
प्रचंड द्वितीयक अग्नि।
आओ, हम मिल कर इस साजिश की शुद्धि करें
क्या भूल गयी
वे आरंभिक सहज किरणजात अग्निस्पंदन और स्फुलिंग।
जब हिमस्खलन और वर्फानी तूफानों से
मैं वह निकला था,
और परिपूर्ण शृंग से
सोपानी प्रपात के लिये समुद्यत था
तभी अचानक हिमनदी और झंझावात सुस्थिर हो गयी,
और प्रगल्भ प्रशांति की असंक्रम्यता में
जैसे सब कुछ दफन हो गया
पर मैं तो हिल चुका था,
सो मुझ से उन्मत्त, कल्लोलिनी भागीरथी ने विदा ली,
और चल पड़ी
सगर-वंशावलि के
डामर (ऐस्फाल्ट) वनों को
आप्लावित करने
पर मैं तुम्हारा वियोग नहीं सह पाता,
मनुपुत्रों ने सिर्फ तुम्हें ही नहीं,
मुझे भी प्रदूषित किया है
मैं वारुणी और दिनमान से संधि कर
तुम्हें कृपाणु बना
पुनः शृंग पर वापस लाऊँगा,

और तुम्हारा पुनर्मूल्यांकन करूँगा
तुम्हारा सम्मोहन सर्वथा नवीन होगा—
किस निकष पर तुम्हे खरा उतारूँगा ?
तुम सन्नाति की कला हो
गत विखर रहा है
और कलिका अभी बाह्यदलपुज मे है
अभिनव की अग्निपरीक्षा स्वय निभ्रांत नूतनता,
अथवा उसकी साहसिक शैल सभावनायें हैं

बालारुण

नव वर्ष का किरणकुसुम
कोहरे के कारण कुछ देर से निकला
चंद्रातपी उदय के बाद भी
शीतकालीन मेघ से
आंखमिचौनी चलती रही
लेकिन जब पद्‌माकर निकला
तो द्विव्या दिवा को
नखशिख तपातप्राय करते हुये

मैंने तो अरिस्टार्कस के ललित मानसर मे
कल ही
अविश्वास का प्रतिमा-विसर्जन कर दिया था,
जब पूर्णप्रभा सूर्यास्त
और चंद्रानन पर
बालारुण बिंदी देखी थी
कौन कहता है
कि काजल से किरण क्षीण होती है ?
शुक्लपक्ष से कृष्णपक्ष
किस अर्थ मे कम है

दीपदंड को
काजल की कोठरी के केंद्र मे रख दो
तो किरण का सर्वसंभव वितरण होता है—
इस कोरी कल्पना के आधार पर
अरिस्टार्कस ने
भूकेंद्रित सृष्टि की धारणा को
चुनौती दे दी।
हजारो साल बाद

स्वय विज्ञान ने
इस किरण-केंद्रित सृष्टि की परिकल्पना का
उद्धार किया
सदियो से कविता और विज्ञान
किरणावेषण और किरणसधान मे लगे हैं
लेकिन लगता है कि
कविता प्राय मयकमोहित
और विज्ञान सौर अनुगामी रहा है
कविता मेघशायी और विज्ञान शैल सेवी रहा है
कविता निस्सीम नील का मुक्त अवगाहन
और विज्ञान वस्तुपरक अभियान रहा है
दोनो ही शून्य और एनार्की बर्दास्त नही कर सकते,
पर लगता है युद्ध से इन्हे परहेज नही है !

कविता मानस को और विज्ञान पर्यावरण को
प्रदूषित भी कर सकते हैं
कुरुक्षेत्र का जन्म युयुत्सा मे होता है,
और प्रथम अणु विस्फोट मरुभूमि मे
मृत्यु मात्र जोवन पर
परतु युद्ध जन्म और स्तनपायी सभ्यता पर
सर्वनाशी वज्रपात है
यह विस्फोटक ग्लेसियर
कोई कैनियन भी नही छोड जायगा

कोहरा मात्र विलबित प्रभात का सूचक है,
किंतु प्रदूषण किरण-कलशो को ही
क्षत विक्षत कर डालेगा
चादनी और धूप हमारी सबसे बडी निधियां
और सततियो का धरोहर हैं
चाँद और सूरज खो गये
तो ब्रह्माड अधा हो जायगा,

सृष्टि और कृति के चक्र रुक जायगे,
और इस महाप्रलय के बाद तो
सभाव्य नासदीय शून्य भी शेष नही बचेगा

किरण और काजल सृष्टि के मूल तत्त्व हैं
मैं किरण-कुसमो को नित्य पाषाण होने का वरदान देता हूँ

नटराज

हमे शून्य से आरम्भ करने की विवशता नही है
शून्य का आधार वे लेते हैं
जिनके इतिहास के कोटर मे
सिर्फ गृद्धो का वास होता है,
जिनका प्रेरणास्रोत मात्र भविष्य हो सकता है
या, फिर, वे जो कगार से फिसलकर
दुरत सागर मे जा गिरते हैं
और एक नये भूगोल की खोज के लिए
विवश होते हैं
भारत का सावयव अतीत
सभ्यता के उदयाचल तक जाता है
और, हमारी परपरा की कोख भी
पराक्रम की मरुभूमि नही हुई है
भारत महादेशीय तथा महाकालिक विशालता का साक्षी
और पर्वतारोहियो के लिये
चुनौती रहा है
पौरुष की इस अर्धनारीश्वरी परपरा ने
भारत मे फैमिनिज्म को भी
लालित्य लोप के जौहर से बचाया है

हमारी सस्कृति ने दर्शन और विज्ञान
दोनो का प्रजनन और पोषण किया है
उपनिषदो मे
सितकेश चिंतन का कैलाश
उत्पादन और प्रजनन प्रणालियो पर आधारित
खडित समाज विज्ञान को आत्मसात करते हुये
आगे जाने का सकेत करता है

मुझे विस्मय होता है
उस सस्कृति पर
जिसके समग्र-द्वद्वात्मक प्रतीक भडार मे
एक साथ ही प्रतिष्ठित है
सगुण और निर्गुण,
द्वैत और अद्वैत,
अमृत और कालकूट
कृष्ण और राम,
तिलक और पैरपूजा,
अक्षत और दूर्वा,
हँस और काग,
रोली और गोबर,
अर्जुन और कर्ण,
अभिषेक और वनगमन,
अपराजित पराजय और पराजित विजय,
पदयात्रा और रथयात्रा,
सत्य, शिव और सुदर !

ऐसी सस्कृतियो मे
विंध्याचल हिमालय नही बनते,
गगा स्वेज नही बनती,
गगा और कावेरी के बीच
सारस्वत नहर बहती है
अधनगा फकीर क्राति का जनक बनता है,
समाजवादी गुलाब से प्रेम करता है,
और प्रियदर्शिनी सूरजमुखी
आर्थिक क्राति का
स्वयसिद्धा सूत्रधार बनती है

ऐसी सस्कृतियो मे
सगीत कर्णभेदी नही होता
समाज परिवर्तन ऋतुपरिवर्तन की
रहस्यमयता,

किंतु सुनिश्चितता से,
आता है
नटराज तांडव
भरतनाट्यम के अनुशासन से
करता है
सम्राट धर्मविजय और सुलहकुल का
प्रवर्तन करते हैं
बूंदों में मोतियों की संभावनायें
साकार होती हैं
वर्गसंघर्ष एक सर्जनात्मक महाभारत का
रूप लेता है
समुद्रमंथन और रत्नगर्भा अन्नपूर्णा की क्रीडाओं का
न्यायसम्मत वितरण होता है
मेघपाश, गोमुख और गंगोत्री से
भागीरथी मैदानों और सुंदरवनों में आती है
नीलाकाश और पंक दोनों से
शतपत्र राजीव अवतरित होते हैं

सांस्कृतिक नाति

हरियाली, नीलिमा और धवलता ने
मुझे पोषित और प्रेरित किया है
खेतो की त वगी तरगायित
हरीतिमा और स्वर्णिमा को
मैंने पवतीय नयनाभिराम मे
बदलते देखा है
किन्तु इन सबो का आधार
धूसर धरती से भी
मैंने प्यार किया है
द्रमो को मैंने देवदारो मे
बदलते देखा है
किन्तु करील और कीकर की महिमा
मेरे मन मे अक्षुण्ण रही है

मैंने महाकाश की नीलिमा को
महासागर की नीलिमा से एकाकार होते देखा है
और, मेघवूतो को प्रशात महासागर मे तैरते
तथा अतलात को घटाच्छादित करते देखा है
किंतु स्वेछा से मैंने
जिस अबर की शरण ली है
वह नीलकठ है

अत सलिला फल्गु, गगा, ससकँचवन
और कालिदी की जलराशियो मे
मैंने कभी गोरो या काली मिट्टी के अश
तो कभी घनीभूत बफ देखी है,
किन्तु कामना मेने
आसिन के निमल जल की ही की है

हहराते बरसाती झपास,
और प्रचड हिमझझावात ने
मुझे विस्मित किया है,
किन्तु अराधना मैंने
चांदनी और धूप की ही की है

अतरिक्ष से पृथ्वी भी
वैसी ही मोहक दीखती है जैसा चाँद
अतर्राष्ट्रीय तिथिरेखा के उस पार के
सीमात-जेताओ को समय का भी लाभ है
कि तु हमारी समृद्धि भूत मे है
और हमारा भूगोल भी खडित है,
आवश्यकता है—
त्रिकाल दृष्टि और चतुर्भुज प्रयास की
जो भारत को—पैदल ही सही—
सप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और
लोकतात्रिक दिशा मे ले जाए
हमे बाहुबलि और वामन का विस्तार
दोनो चाहिए
सस्कृति की लता को
स्वेद और अवकाश दोनो चाहिये
और, भारत मे दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी
तीनो की पूजा होती है

हमे योजना के इन्द्रधनुष की टकार
वसत और हेमत के सम्मिलित ऐश्वर्य मे
करनी होगी
हमारी पहली क्रान्ति अहिंसक थी,
आर्थिक क्राति की अमिताभा की भी जय होगी
हमारा मार्गदर्शक कलिंगोत्तर अशोक है

विधाता और इतिहास ने
एक अखड भौगोलिक साँचे मे

हमारे समाज को
प्रखडित मोजेक-सा ढाला है,
जिसकी विषमताओ को दूर करने मे
विधायक वर्त्तमान लीन है
हमारी सस्कृति सामासिक,
अर्थव्यवस्था मिश्रित,
राज्य केंद्रोन्मुखी सघीय
तथा तकनीक समुच्चयी है
कृषि और उद्योग के बलराम और कृष्ण को
अब ग्राम्य और नगरीय अभावो का
हरण करना है
भारत मे औद्योगीकरण का शुभारभ
वस्त्रोद्योग से हुआ था,
कपडा मिलो की हडताल अब और कब तक चलेगी ?
नव उद्योगो के समक्ष
प्रेरक मिसाल पेश करनी है

हिमालय

हिमालय की भारत मे स्थापना के पीछे
नियति का कोई महत् उद्देश्य रहा होगा।
चक्रवर्त्तियो तथा कोटिभुज गणनायको की शृखला
शायद हिमालय के बिना सभव नही होती।
सिंधु, गगा, गोदावरी,
नमदा, ताप्ति, कृष्णा और कावेरी
की धारायें भी तो
पवतो और सागरो की ही क्रीडायें हैं।
वृक्ष रेखाकित धवला के अभाव मे
कालिदासो की अक्षर परपरा क्या सभव होती।
उद्योगियो, किसानो और श्रमिको के
पर्वतीय प्रयास से ही तो
उस महापोत को हम
पुन सागर-सक्षम बना सके हैं
जिसे बट्टे खाते का व्यापार माना जाने लगा था

काल-आकाश का सधान करने वाला हिमालय
नदियो की बाहो से
हमारा एक-एक अग
अकुरित करने को भी
विकल दीखता है
इन्ही भुजाओ की सगमरमरी कल्पना ने
यातायात और सचार के जालो को
प्रेरित किया होगा

हिमालय के अभाव मे
क्या भारत भारत बन पाता?
प्रलय के अग्निप्लावनो मे नहा कर

निर्धूम निकलने वाली
हमारी कचनकाया परपरा
क्या पछुवा के झकोरो मे
पुरवायी का रस घोल पाती ?

कल्पतरु

उद्पादन यन्त्र पर्यावरण के लिये
दावाग्नि न बनने पाये
एक चिमनी तो सौ देवदार लगाओ

कंक्रीट जगलो को हरियाली, नीलाकाश
तथा मेघ का पटावरण दो
फसलो को काटो
पर वनो से 'चिपको'
आसुरी वृत्तियो को मारो
किंतु वन्य प्राणियो को अभयदान दो

खांडवदाही गांडीव पर
अब कोनिफर का तीर चढाओ
मानवता के सूखते कठ मे
गगा की धार दो
निम्नगामी बूंदो मे भी
ऊर्ध्वगामी यज्ञशिखा की शक्ति दो
कल्पतरु, कामधेनु, अन्नपूर्णा, रत्नगर्भा
तथा वायुधावी अश्वो का वरदान मांगो
जेट भी अश्वारोहण की गरिमा नहीं [illegible]

पर शाति के लिये
पदयात्रा करना न भूलो
परमाणु वेताल को
सिर्फ शाति और सुरक्षा के [illegible]
आरोहण-अवरोहण करने दो
विघटनाभिव अणुतन
द्रुमाकार मरीचिका

और सर्वनाशी तांडव है
पर यह भूमंडलीय महाभारत
पांडवो और कौरवो के
सम्मिलित सत्प्रयास से ही टल सकता है
कूटस्थ कृष्ण के सम्मुख
इस से बडी चुनौती कभी नही आयी

विज्ञापन

बुडलाडा की 'प्रेमप्यारी अग्रवाल'
("प्यारी बहनो, न तो मैं वैद्य हूँ और न डाक्टर   )
तो अब पहचान मे भी नही आती !
अस्वीकरण की विनीत मुद्रा मे दावा
अब उन्होंने पीछे छोड दिया है !
बाजार भी तो अब विश्वव्यापी हो गया !

विज्ञापन के टिड्डी-दल
अब सर्वत्र उतर आये हैं,
कुचो और नितबो पर भी
इस मिलावटी ज्यामिति से
सौंदयबोध को उपद्रवी आघात लगता है
विज्ञापन मे आजकल काफी प्रतिभा और प्रतिमा जाती दीखती है,
पर विज्ञापन वेद नही बन सकते

पुजोत्पादी समाज में
विज्ञापन के प्रयोजन से इनकार नही है
लेकिन सुग्रीव का पहला कर्त्तव्य तो सीता की खोज है

इन गोपियो से भी कह दो
खट्टे दही मे
'अमिय हलाहल' घोल कर मत्ये न मढ़ें
उत्तरदायित्व के हित मे
इन्हे जमुना मे स्नान करने को कहो
कृष्ण, सीजर और अरस्तू
सिफ इनके मिथ्या चीरो का ही हरण करेंगे
सदेश मात्र माध्यम नही है

इन्हे कह दो
आवश्यकताओं के अकुरो का विस्फोट
लपटी इच्छाओ और सर्वसोखी मांगो मे न करें
हमें गृहदाह से बचायें
कल्पवृक्ष अब 'उत्तर' मे
फूलने फलने लगे है,
पर उन प्रचुर मालदार क्षेत्रों से भी कह दो—
'क्लब ऑफ रोम' के सिरफिरो,
रैल्फ नेडरो और गाँधी के
दृष्टिपथ का अनुगमन करें
यह स्वय उन्ही के हित मे है,
मात्र 'उत्तर-दक्षिण' का सवाल नही
मिट्टी को अहिल्या और 'मिडाज' बनते
कितनी देर लगती है !

सीमा

रेगिस्तान, सागर, और अतरिक्ष मे
निर्भूम भटकते कल्प बीते,
पर सीमात की मृगतृष्णा शेष नही हुई
सिक्ता और शिखरो,
सुरसा तरगो,
और दुर्लघ्य शून्यो का लाघता
मैं बढता ही गया,
पर पर्णकुटीर की मरुमरीचिका साकार नही हुई

भूमि चाहे प्रशात मे या अतलात के पार मिले
अथवा उत्तमाशा के सुदीर्घ मार्गांत पर,
पदावलब चाहे मयक, शुक्र, अथवा
अन्य सुग्राह्य ग्रहो पर मिले,
हमारी सार्वभौम रथयात्रा की निर्बंध भागीरथी,
माग मे क्रमश विराट होती,
हहराती-घहराती बढती ही जायेगी

मैं शुचि कुक्षिजात योद्धा हूँ—
मुझे शबरी ने बेर,
गोकुल ने नवनीत,
और सुमेरु की अप्सराओ ने
शुभ्र सोम का पान कराया है
मैं निमि और ययाति की
अमर्त्य सतान हूँ
मैं अभिमन्यु और भीष्म,
कर्ण और कौतेय का सम्मिलित शौर्य हूँ,
नियति ने मुझे

सिंघु, गगा, ब्रह्मपुत्र और विंध्यातीत कृष्णाओ के
अक्षय सास्कृतिक सगम पर ला खडा किया है—
इस त्रिविक्रम तीर्थ की महिमा
सस्कार और समन्वय,
महावृद्धि और महाबोधि मे है

चक्रवर्द्धन

त्रिभग ने मुरली को किनारे रख
पाँचजन्य उठा लिया है
सप्ताश्वो को वायुवेग से उडाओ—
मैंने निशा के उत्तरार्द्ध मे
उदयक्षेत्र मे विरमित मेघखडों को
विजय के सुभग सकेत मे बदलते देखा है

पितरो, देवो, गुरुओ और सुवामाओ से अर्जित
स्थितप्रज्ञा से मैं लैस हूँ
इस बार अमरावती मे
आरण्यक आख्यान के उपरात
मेरा निर्णायक सग्राम होगा
मेरा रथ सजाओ—
सीमित, सग्रामों की शृखला की शिरा पर
महाभारत के विप्लवी मेघ
उमडने-घुमडने लगे हैं,

अजता

धरित्रि विस्मित है—
इस ऊर्जा को कहाँ स्थापित करे ।
इस सत्राग्नि से
एक साथ ही
जगन्नाथ यात्राओ,
विक्रमी तरगों,
और सहस्रोदयो का सूत्रपात होता है,
सघन सृष्टि और विध्वस की
शृखला का चक्र चलता है

तुम्हे जानना साक्षात शक्ति को जानना है,
सत्य को जानना है,
शिव और सुदर को जानना है
तुम्हारी आरक्तवसना समुन्नत स्फटिक प्रतिमा
साक्षात शक्ति नही तो क्या है ?
तुम्हारे बालारुण मुखमडल पर
चितन के मेघ छाये तो दिगत चितनशील हो गया,
जब अचानक निश्छल हँसी फूट पडी
तो सवत्र निर्मेघ धूप खिल गयी

बोनसाई—वामपथी गमले मे

दूर और शायद मेरी बाँहो के परे
पर मेरी साँसो और सभावनाओ की सुप्रिया !
क्या है
जो मिलने के समय तो
हमे मूक बना देता है
पर विरह मे अभिसाराकुल ?

तुम्हारी निष्ठा मेरी हो सकती थी
और मेरा सकल्प तेरा
मैं जिनके खिलाफ सघर्षरत हूँ
उन्हे मैं अब घृणा नही करता,
और जिनके कधे से कधा मिलाए हूँ
वे तुम्हारे ख्याल से गुमराह हैं

पर मैं उस मे अर्थ देखता हूँ
जो तुम्हारी नजर मे शायद निरर्थक हो,
मैं इस अपूर्ण और बेचैन विश्व को
निमित्त और सभावना से शून्य नही पाता

बस अभी छूटी नही है,
तुम्हारे लोगो ने उसका अपहरण कर लिया है,
और मेरे लोग आस लगाए बैठे हैं
सकट झेलना और जगाते हुए टूट जाना
कुछ लोगों की नियति है
जबकि दूसरे वैभव में लोटें,
पारी बदल-बदल कर
कबल ओढ कर घी पियें
और दिखावटी सजा पायें

हम मिल आज रहे हैं
पर हमारी अस्मितायें
खडित फिर भी समग्रकाल की शिखायें हैं
बहुत-से अदृष्ट सेतु हमे जोडते हैं
और हम एक दूसरे की लुप्त सरस्वतियो को
उजागर करते हैं.

मैं प्रमुखत मूल हूँ,
तुम तना
पर आओ हम मिल कर शून्य का सधान करें
मैंने शायद तुम्हे
परपरा की आधुनिकता के प्रति
सजग किया है,
और तुमने शायद मुझे
परिवतन के प्रति ज्यादा खोला है

पर भस्मासुरी दुष्परिणामो का भी ख्याल करो
यूटोपिया के लिए
सब कुछ दाँव पर लगा दें ?
क्या नियोजित समुद्रमथन से]
वाछित परिणाम नही निकल सकते ?

मैं नही चाहता
कि तुम मेरी कावन प्रतिलिपि बनो,
और मुझे पता है
तुम भी नही चाहती
कि मैं तुम्हे जेरॉक्स करुँ,
तुम्हारे सकेत अगर मैंने सही पढे हैं
क्या फिर भी आद्य स्तर पर हम एक नही हो सकते
आलिगबद्ध शाखाओ के साथ
अनत तक विकासशील ?

हेमंत

वसुधा जब ग्रीष्म की अग्नि परीक्षा से
निर्धूम निकलती है,
मज्जा-प्रकंपी शीत को निष्कंप झेलती है,
पावस में अंग अंग सिक्त होकर
नहा लेती है,
वसंत के पर्णोन्मेष और पराग से
अनुप्राणित हो लेती है—
तब कहीं अनायास अभिभूत कर देने वाली
परिपक्व हेमंती गरिमा मे प्रकट होती है

सप्तस्वर, सप्तसिंधु, वर्णों और ऋतुओं के
पदचिह्नों को पढ सको
तो पाओगे कि गंतव्य हेमंत है
वसंत अगर श्रावण का निर्मल फुहार है,
तो हेमंत क्षितिजव्यापी इंद्रधनुषी मुस्कान
वसंत अगर युग्मचरण दूज है
तो हेमंत पूर्णकला चांद

न जाने कितनी सम्मिलित सिद्धियों और निधियों से
हेमंतश्री उपजी है
अक्षत तृणकोमल मैदान और सुंदरवन,
करीन्न और आम्रकुंज,
यूक्लिप्टस और शालवन,
गन्ने और मृणाल,
वृक्षालंबी और क्षितिलिप्ती लतायें,
अनुगूंजक हरिताभ घाटियाँ,

सगमरमरी और ग्रेनाइटी चट्टानों,
गहन भृगु और वैष्णवी गुफाय,
निर्झरों और नदियों के निनाद
नवयौवना वसत हेमत का प्रेमानुशासन
आखिर पयोधर नहीं माने !

उसका पक्ष किधर है ?

याद है
उस सघन वन का वह नामवर दरख्त ?
पायक पादपों और विशाखाओं से रक्षित
उस दुर्ग में
आठों पहर उस पर
आश विश्वास का कलरव गूंजता था
हर सुबह-शाम सोना
और दोपहरी चांदी की अनंत चादरों-सी
पसर जाती थी

एक तूफान आया
और भरी दोपहरी में
सूरज घायल हो गया !

वन का विस्तार होता गया,
पर वह नामवर दरख्त सूखता गया
उसने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा,
बल्कि छाया और पत्र-पुष्प ही दिये
पर उस पर हर-एक ने कुल्हाड़ी चलायी
उपयोग सब ने किया,
फिर दातून-सा तोड़ कर फेंक दिया
अनवरत आंधी की चपेट में सन्त्रस्त
वह टूटता गया, टूटता गया
इस विकट व्यूह में विजय पाना तो दूर,
युद्ध भी वह किस तरह करे ?
उसका पक्ष किधर खड़ा है ?
शत्रु-पक्ष कौन है ?
हर तरफ वानस्पतिक विरोध का चेहरा,

पर किसी पर भी
न तो शत्रुता का भाव और न मित्रता का
विचित्र माया है ।
मित्र को विरोधी बनते देर नहीं लगती,
तो फिर विरोधी को शत्रु बनने कितनी देर लगती है ?

ज्योति-तरी

स्निग्ध सुस्मित चाद का किरण-कोण
अंधकार को चीर
प्रकट हो रहा है—
क्रमश वर्द्धमान
सपूर्ण कलाओ की सभाव्य स्वामिनी के पदाघात
अवनि ओर अबर पडने लगे हैं

तिमिर-सिंधु मे
ज्योति-तरी का बेडा सजाओ,
चचल चारु किरणो को
सविता की ऊर्जा दो,
जया को जयश्री का माल्यापर्ण करो

इस दरख्त की बहार

इस दरख्त का पोर-पोर
दर्द का रिश्ता है,
पत्ता-पत्ता ममता की शीतल छाया
डाल-डाल पर
त्याग और तपस्या के तिनको का नीड है
और टहनी-टहनी
समर्पित प्यार की मीठी लचक
आँधी और वसतानिल मे एक समान
इसने स्नेह के मजर और फल का अबार लगाया है
पर वसत इसने देखा कहाँ ?
सिर्फ शीत, घाम और झपास झेला है !
एक-एक आस-अरमान
लमहो के पीले पत्तो से गिरते गये,
और बारहमासा पतझड का समा बँधा रहा
इस दरख्त की बहार
जहाँ कही भी बदिनी हो
मैं उसे उन्मुक्त करूँगा और वायु-वेग से उडा लाऊँगा

चीरहरण

मेरा मन
आसिन का समीरादोलित
लहलहाता सुदूर फैला
धान का पूर्वांचल टाल,

मेरा मन
व्यास तटो पर
स्वर्णाभ गेहूँ के पवन-प्रेरित निस्सीम मैदान,
मेरा मन
धवल और धानी आवरण मे
परिवेष्टित नगाधिराज,
मेरा मन
अतर्धाराओ और उच्छृखल लहरो से प्रतिद्वेलित
उन्मुक्त सागरिक चिद्विलास

मेरे मानस और मेरी काया ने
इतने अतिक्रमण और अत्याचार सहे हैं,
इतने शोषण और प्रदूषण झेले है,
अस्मिता के अपहरण और अपगण के
इतने शिकार हुये है,
इनकी सचित भावनाओ
और प्रेमानुभूतियो पर
इतना डाका पडा है
कि जहाँ भी ये
मानवीयता की झलक देखते हैं
तुरत शकित हो उठते हैं।
मेरा मन अब

दु शासन के हाथ में है
और दूसरा आगत परदेशियो के हाथ
मैं अपने ही देश मे परदेशी हो गया हूं ।

मानसरोवर

मैं कन्यूट को तरह
सागर की लहरें गिनता हूँ
और सरस्वती के हंसो की
चरवाही करता हूँ
खेत से उड़ कर आया कपोत हूँ,
पोटली भर पुआल से
आइवरी टावर पर
घोसला बनाने का हास्यास्पद प्रयास करता हूँ,
मैं तुम्हारे धूप के चश्मे उतारने नही आया,
तुम्हारी दृष्टि भी हरना नही चाहता
मैं तो सिर्फ एक आधारशिला हूँ
जिसके सहारे
तुम स्वय अपनी आंखो से
सृष्टि और कृति के निहितार्थ समझ सको
सक्रातियो मे अतर्निहित किरणो,
कोलाहल मे अतर्व्याप्त सगीत,
तथा धूलधूसिरत मानवता को सहयोग दे सको

मृगमरीचिका

मैं तुम्हारा अनुगामी हूँ,
पर तुम्हे स्वय अपनी दिशा का तो पता हो !
तुम दिग्भ्रम नही पर चक्रवात हो !

मैं चकोर हूँ,
अगार खा कर भी
चांदनी की सृष्टि करता हूँ

मैंने हर गतिशील पाव पर
शुभाशु सुमन बिखेरे,
पर स्वय मेरी गति और लय कही खो गये है

मैंने जहाँ कही भी ज्योति देखी
स्वय अधकार पीकर भी
उसकी अभ्यर्थना की
पर स्वय मेरी नियति
त्रिशकु धूमकेतु-सी
अधर मे टँगी है

मैं अभिशप्त धावक हूँ—
शिखर पर पहुँच कर भी
गति ही मेरा गतव्य बनी हुयी है

मैंने मुक्तहस्त न्याय बाँटा,
पर स्वय मृगमरीचिका मे
सपने दफन करता रहा
सभी मेरे अपने हुये,
पर मैं पराया ही रहा

विधि से विद्या तक

सच है सार गर्भित माध्यम ही संदेश है
संचार वह माध्यम है जो बालुका को
संरचना मे बदल देता है
संचार से सागर का जन्म होता है!
बूंद चाहे गागर मे हो या सागर मे,
उसकी नियति जैवाण्विक समष्टि है

काल अनगिनत लोको की सृष्टि कर चुका है
काल और लोक के भ्रमण से
भविष्य के आश्चर्य कम होते हैं,
संभावनायें शून्य नही होती-
गणित आकाश को बटुआ मे,
और स्टेडियम को विस्तरबंद मे नही बांध सकता
हां, ग्रहविजय और मैराथन कर सकता है

हमारी जययात्रा एक महत्त्वपूर्ण पठार पर आ पहुँची है
मेघदूत और पतंग से टेलिप्रिंटर तक,
तनो पर खुदे संदेशो से लेटरबक्स तक
कागज के नावो से समाचार पत्र तक,
हंस और कपोतदूतो से टेलिफोन तक,
टट्टू डाक से उपग्रह संचार तक,
गिराहीन नयन (मूक चलचित्र) तथा अनयन गिरा (रेडिओ) की
दुरभिसंधि से जन्मे टेलिविजन तक,
विधि से विधा तक

परिवर्त्तन, परावर्त्तन और प्रगति का चक्र चला,
अंधविश्वास पर विज्ञान हावी हुआ,
राज स्वराज मे बदले,

मृगमरीचिका

मैं तुम्हारा अनुगामी हूँ,
पर तुम्हे स्वय अपनी दिशा का तो पता हो।
तुम दिग्भ्रम नही पर चक्रवात हो।

मैं चकोर हूँ,
अगार खा कर भी
चाँदनी की सृष्टि करता हूँ

मैंने हर गतिशील पाँव पर
शुभाँशु सुमन बिखेरे,
पर स्वय मेरी गति और लय कही खो गये है

मैंने जहाँ कही भी ज्योति देखी
स्वय अधकार पीकर भी
उसकी अभ्यर्थना की
पर स्वय मेरी नियति
त्रिशकु धूमकेतु सी
अधर मे टँगी है

मैं अभिशप्त धावक हूँ—
शिखर पर पहुँच कर भी
गति ही मेरा गतव्य बनी हुयी है

मैंने मुक्तहस्त न्याय बाटा,
पर स्वय मृगमरीचिका मे
सपने दफन करता रहा
सभी मेरे अपने हुये,
पर मैं पराया ही रहा

विधि से विद्या तक

सच है सार गर्भित माध्यम ही सदेश है
सचार वह माध्यम है जो बालुका को
सरचना मे बदल देता है
सचार से सागर का जन्म होता है।
बूंद चाहे गागर मे हो या सागर मे,
उसकी नियति जैवाण्विक समष्टि है

काल अनगिनत लोको की सृष्टि कर चुका है
काल और लोक के भ्रमण से
भविष्य के आश्चर्य कम होते हैं,
संभावनायें शून्य नही होती-
गणित आकाश को बटुआ मे,
और स्टेडियम को विस्तरबद मे नही बाँध सकता
हा, ग्रहविजय और मैराथन कर सकता है

हमारी जययात्रा एक महत्त्वपूण पठार पर आ पहुँची है
मेघदूत और पतग से टेलिप्रिटर तक,
तनो पर खुदे सदेशो से लेटरबक्स तक
कागज के नावो से समाचार पत्र तक,
हस और कपोतदूतो से टेलिफोन तक,
टट्टू डाक से उपग्रह सचार तक,
गिराहीन नयन (मूक चलचित्र) तथा अनयन गिरा (रेडिओ) की
दुरभिसधि से जन्में टेलिविजन तक,
विधि से विधा तक

परिवर्त्तन, परावर्त्तन और प्रगति का चक्र चला,
अधविश्वास पर विज्ञान हावी हुआ,
राज स्वराज मे बदले,

वसन स्वल्प होते गये,
गरिमावान लोगो ने गाली सीखी,
मानस सागर के गोताखोरो की डुबकियाँ गहरी होती गयी
फिर भी द्रौपदी का चोर शेष नही हुआ
महानतम रहस्यहर्ता आइस्टाइन ईशवादी बना रहा
आकस्मिक नही कि चलनशील वस्त्रो मे
धोती और सारी विश्व मे सब से बडे वसन हैं,
और हमारे स्वातत्र्य सग्राम के विपुल शस्त्रागार का
अमोघ अस्त्र चर्खा था

सूरजमुखी की प्रशस्ति मे

उत्पादन-श्रम नारी का,
लेबल सिर्फ तरंगजीवी शिव का !
अमृतकोष का सुमेरु त्रिया
अमरत्व पर एकाधिकार सिर्फ त्रिभंग का !
सवाक् नलिनाक्षी घूँघट मे,
शेषनाग सिरहाने मे !
पटल की पूजा,
शकुन्तला का पराग़द्रोही किंशुकों द्वारा मोल-भाव !
यह नाभिकाणु का आसुरी शोषण है

इस वननीति से
प्रकृति आहत होती है,
उसके पल्ले रेगिस्तान आता है
और मरुद्यानो तथा मरुफलो का सुल्तान
पुरुष बन बैठता है

यह शक्ति का अवमूल्यन कर
चांदनी का सारा श्रेय
सूर्य को देने वाला विधान है
लेकिन ग्रीष्मप्रपची सूर्य का अत्याचार
अब और नही सहा जायगा
चन्द्रग्रहण-जनक विषम खगोल का रथचक्र
गड्ढे मे फँस चुका है
मानुषी की मुक्ति का श्रृंगार-साधन
विस्फोट को तत्पर है
नारी मात्र निशा नीहार नही है
निशांत निकट आ रहा है
अरुणोदय दिग्विजय के लिए प्रसाधारण-ऋणी नही है

प्रभातद्रोही कसो और कौरवो के बाँधे
यह किरण बाँधी न जा सकेगी
चद्रातपी सूर्योदया के पदचाप
और श्याम किरणें सघन होती जाती हैं
इस बार तो अपने नीलाबर के लिये
वह कृष्णाश्रिता भी नही दीखती '
स्वावलबी सूरजमुखियो को वदना मे
एक मन्त्रोच्चार मेरा भी

आलेख्या

व्यक्ति रूप मे भी तुम शरीरातीत हो
और स्त्रीमात्र से एकाकार होकर भी
हर स्त्री तुम्हारी सगिनी है
और हर पुरुष तुम्हारा पुत्र
नीलसर अब नीलांतरिक्ष हो गया है
नारी आदिशक्ति है और पुरुष स्तनपायी सभ्यता का जनक

तुम पिनाक की टकार
और शचीन्द्र का वज्रघोष हो
तुम्ही कभी पुष्पधन्वा बन जाती हो
तो कभी गाडीव,
कभी नटवर का महारास तो कभी नटराज का ताडव
कभी अहिल्या का अभिशाप तो कभी परशुराम का कुठार
तुम्हारे आलेख के बिना
नृसिह नख-दत गलित व्याघ्र दीखता है

हिमालय से फिर एक बार
प्रलय प्लावन का विस्फोट करो—
काया और कला को एकाकार हो जाने दो,
सतरण-सक्षम भुजाओ का प्रताप परख लो
पत्तो को भी हम डूबने नही देंगे

कटनी

नैनो के नीर से सीच-सीच कर
आशा के जो बीज बोये थे
उनकी भरी पूरी फसल
खेत मे ही लुट गई
ऐसी अपूर्व अन्नपूर्णा
तो भाग्य से ही उपजती है
धरती ने हृदय फाड कर वैभव लुटाया है
पर मेरे पल्ले मजदूरी तो दूर,
लोढा-दिनउरा भी नही आया !
उलटे अपमानो के नागफणी से
पाँव लहू-लुहान हो गये !

शस्य पूर्णिमा का भुवनसोम
दशो दिशाओ से उगा है
गालो के डिंपल और पिंडली के चपक से
इस अरुणोदय मे ग्रहण नही चार चाँद लगते हैं !
दिगतव्यापी ज्वारो और तरगो पर तिरता चाँद
शिरोबिंदु की ओर गतिमान है
जिन्हे सीपो और कौडियो की उम्मीद थी,
उनके हाथ पाचजन्य और स्वय चचला लग गयी
इस चाँदनी मे
हम भी अपने जख्मो की
मरहम-पट्टी कर लें,
शायद हमारी मर्मांतक पीडा से
चाद का हृदय पसीज उठे !

केशव

आओ जमुना किनारे
कदव से लग कर बैठो,
वोलो, आज क्या उठाओगे—
गोवर्द्धन, मुरली, पाचजन्य, या सुदर्शन ?

तुम्हारे विना कुछ भी तो पहले जैसा नही है—
न तो मध्य मे नदिया की कज्जल धारा,
न तो पश्चिम मे वृन्दावन,
न तो पूरव मे गोकुल

तुम्हें गोवर्द्धन उठाना होगा—
झोपडियो और फुटपाथो पर
अव भी लोग भूखे और नगे हैं
अव भी लोग पेट काट कर शिर छुपा पाते हैं
अव भी वहुयें जल रही हैं
और नारियाँ विक रही हैं
अत तुम गोवर्द्धन उठाओगे

तुम्हें मुरली भी उठानी होगी
विलगाव और अकेलेपन मे भी
गदी वस्तियो, फुटपाथो और झुग्गियो मे भी
प्यार करते जाना
हमारी सॉस्कृतिक (सभवत मानवीय) विवशता है
अत तुम मुरली भी उठाओगे

तुम्हे पॉचजन्य भी उठाना होगा—
विधाता ने तो विषमता का
आरोपित उत्तरदायित्व उतार फेंका है,

पर मानव निर्मित विषमताओं के
नये दुर्ग बनते जा रहे हैं
उन दुर्गों पर फतह् करने को
तुम पाँचजन्य भी उठाओगे

तुम्हे सुदर्शन भी उठाना होगा—
सत् और असत् के सग्राम मे
द्वद्वग्रस्त मानव
आज भी कगार पर सत्रस्त है
अत तुम चक्र भी उठाओगे

जरूरत है
कूटस्थ कृष्ण की भी—
भस्मासुरी सहार की
अभूतपूर्व तैयारी के बीच
तुम सृजन और उत्तरजीविता का
विराट रूप भी दिखाओगे

वोधिसत्व

मैं मौसम और वक्त के थपेडो से टूट रहा हूँ
चील और कौअे मुझे नोच रहे हैं
मुझे हिंसा और कृपा दोनों सालते हैं
कृपा तो नकली महानता का जाली सिक्का है
पौरुष तो सिर्फ सम्मान का विनिमय जानता है

मैं मूल-प्रवण पादप हूँ,
पीपल का पत्ता बहुत समीर-सवेदन होता है
मुझे कालबोधिवृक्ष की छाया मे
बुद्ध-चरणो पर गिर
वोधिसत्व का अन्वेषण करने दो
मेरा अतर अणु ब्रह्माडाब्दो की समस्त गतियो का
सवेदनशील सूचक है
मेरा अवकाश मेरे कर्मकलापों से भी ज्यादा
उवर होता है

'धोबिया जल बिच मरत पियासा'

श्रम आराध्य है और स्वेद अमृत
जहाँ-जहाँ श्रमिक का पसीना गिरा
ऋद्धियों और सिद्धियों की गंगा फूटी

श्रम में किरण छीण नहीं होती,
सूर्य का मुंह टेढा किसी ने नहीं देखा
चांद को भी क्षय से बचना है
तो उसे श्रमिक बन जाने दो

पर क्या धोबिया जल बिच पियासा ही मरेगा ?
श्रमिक को कागजी सत्ता नहीं,
सह भागीदारी चाहिये

सागर

सागर जब पास था
तब उसे मैंने फेनिल लहरों के रेशमी मेमनों में
खो जाने दिया !
मैं सागर में कितना विलीन हूँ
यह तब जाना जब सागर दूर है !

तब दो कदम साथ न चला,
और अब आजीवन सहगमन की अभीप्सा में
दौड़-दौड़ कर दम तोड़ रहा हूँ !

हंसदूतों की अनंत त्रासद प्रतीक्षा में
तप-तप कर
कृश कंचन-जरदोजी धूल बन चुका है
सघन बरसात के बावजूद
मिट्टी किसी तरह दूर्वामूल में अटकी है
कि कभी तो मेरे छलिया कृष्ण को
अपनी मुरली की स्मृति आयेगी

पर सागर क्या जाने
तब भी मैं उससे विमुख नहीं था
चक्रवर्ती नृत्य में निमग्न
सुभद्रा की धुरी तब भी कृष्ण ही था

नागरिक

यह छिपा नही,
सिर्फ शीतनिद्रा मे था
अश्वारोहरण कर चेतना के
सतत् विस्तरणशील व्याप्तियो मे
अग्निवाण की लय से ऊर्ध्व उड्डयन के लिये
उन सागरिका वर्तुलो मे खो जाने के लिये
जिन मे न तो बिन्दु है
और नाही उपेक्ष्य परिधियाँ
पर सुदृढ केंद्र के बिना
क्या यह कुंडलिनी योग ठठेगा ?
और क्या वह वरण वरेण्य होगा
जो सामासिक और सर्वात्मसाती नही है ?
क्योकि हम नाश और ध्वस
सिर्फ पुनर्निर्माण और पुनरावतरण के लिए]करते हैं

काशिराज को मुकुट विक्टोरिया ने पहनाया
और स्वर्णिम ततुजाल मे प्रज्ञा के साम्राज्य की पैमाइश की
नूतन प्रतिमान और सिद्धात
न तो रेचन करेगा
और नाही नये अभियानो का माग अवरूद्ध
'वहवोबुवेगा' का मात्रिक विखडन कैसे और क्यों कर हो ?
उसके दक्षिण मे ब्राह्मण बैठा था
और वाम मे क्षत्रिय,
अथवा क्या वह चक्रवात था ?
सुविज्ञ उतथ्य ने
उपनिषदिक सूक्ष्मता और आइस्टाइन दृष्टि से
नये सौर मडल का अनावरण किया
पुलस्त्य ने शौर्य से

समता के महाभारतो का चित्रण किया,
और निराश नही हुआ

समागम की पूर्णाहुति पर
सब ने विराट वरगद की
शीतलच्छाय शाखो का सहारा लिया
सब ने ऊँची अटारी से
जनजागरण और राजनीतिक लामवदी पर

आग और वगूलो का अण्डजनन किया था
प्रियव्रत ने निर्णायक सत्र का सूत्र सभाला,
और पैंडोरा ने रोमन अग्निदेवो का आतिथ्य किया था

कुशस्थली मे
एशिया के सब से बडे सर्कस पर
जोरदार सेमिनार हुआ ।

सदीप

वर्तिका और शिखा के बिना
मिट्टी के दिये की क्या बिसात !
चाक से उतरते बारिश आयी,
यम दीवाली की सुबह कौओ ने लोलाया
फिर खाली दियो को बटोरते
बच्चो की मडली आयी
और बरगद तले
'तराजू-तराजू' खेला

सयोग कि कुशल साधिका को
वह सदीप भा गया,
और उसके हाथो वह मदिर पहुच गया

इन्द्रधनुष

सगमरमरी शिलाओ के नगर पर
प्रवर्द्धिष्णु वर्णों का इन्द्रधनुष
पिघल कर बरस गया होगा
शतरूपा वसुधा और उसके
सुपर्ण कुमुद-कोप पर
समीरादोलित, भग्नात्म, शीतांशु
केशपाश बिखर गया होगा
प्रशाद्वल स्वर्णिमा और नीलिमा ने
विक्रमी पुत्रो पर अपना अनत वैभव
न्यौछावर कर दिया होगा
अरण्यो, उपारण्यो, तटो और कूलो पर
तनुजा तरगो का सप्तसिन्धु
उमड आया होगा

उष्ण, अक्षत बर्फ में यह इन्द्रप्रस्थ
एक दिन मे निर्मित नही हुआ
अजेय साहस ने सीमात का फतह कर
समकोणो और समथ सेतुओ का नगर बसाया

वन्य प्राणियो के सुकोमल फरो से
शीत का पूर्वानुमान करने वाले
आरक्त भारतीय आदिराजा की
इस बार क्या भविष्यवाणी है ?
नील नदी के इस पार
गुलाबी रेणुकादमो के नगर से
वसताभिसार की आकुल कामना करता हूँ !

आकाश मथन

अकाल ग्रस्त भूमि मे यही कही
वैभव का कनककुभ गडा है
जिसे विदेह के हलाग्र का प्रहार
खोद निकालेगा
धरती का अग प्रत्यग
सूखे विटप सा सहजाग्निधर्मी हो गया है
खर-पात मे एक चिनगारी भी
महत् दावाग्नि-सी बल उठेगी

एक आदिम किरण
प्रथमप्रसवा प्रिज्म से गुजरेगी,
और स्पेक्ट्रमी वर्णावलि मे
कतारो मे सज जायेगी
आकृतियो और उत्कीर्ण रत्नो का परिमडल
तापदीप्ति मे जगमगा उठेगा
तारुण्य तरुण तरुओ पर
वासती लिपियो मे
मिष्टिमधुर प्रियनाम लिखने चल,देगा—
तमोदीप्त नतोन्नत नक्षत्र मडल मे
महारास का आलम होगा !

फिर, सरचनाओ और आकृतियो पर
जैसे तरल लावे का प्लावन फट पडेगा
उस उत्प्रेरक रसायन मे
रूपशक्ति द्रवीभूत होकर
कोलाजो मे बिखर जायेगी

फिर, क्षण भर को सृष्टि मे कालरात्रि छा जायेगी
जो क्रमश उर्णाभी तरल अरुणोदयो मे निखर जायेगी
सुरेग्य लीको का
अल्हड उन्मत महानदो मे
सद्य परिवर्तन हो जायेगा
प्रशस्त मडलक उदयाचल से
सप्ताश्व का सुश्रृखल सप्त उड्डयन होगा

समशिख पर्वतो का सुगढ सतुलन
हगामी उलझेडो मे खो जायेगा
नक्षत्र युद्ध के-से सर्वांदोलित प्रहार में
औदत्र चित्रगुप्त के रोकड पर
काली स्याही पोत देगा
नियत्रण कक्ष मे
विश्वकर्मा विनोद मे कप्युटर के कान उमेठ देगा
टेलिफोन एक्सचेंज के सस्यासूत्रो मे
असमाधेय उलझाव आ जायेगा

अतश्चक्रज भूचाल और भूस्खलन मे
क्रमाक का लोप हो जायेगा
सौर मडल भगाकृति अडो-सा अव्यवस्था के
जबडो मे समा जायेगा
ताडवी रुद्राक्ष के ऊधम मे
सृष्टि अराजक आदि-गर्त्त मे जा गिरेगी
फिर होगा कटकित चक्रो का नख-दत-गलन
और विराट वैदिक इजन के क्रमावर्तन का
परकटे गिद्ध-सा अत पात
मथन के उपरात क्या शेप रहेगा ?
क्या पुनर्नव होगा ?
किन आकाश गगाओ का नवोदय होगा ?
कौन सी लब्धियाँ हस्तगत होगी ?

किन लाघवो का लाभ होगा ?
कौन से बुलबुले फूटेंगे ?

प्लावन मे खोये मूल्यो के पुनर्लाभ के लिये
सुधा पयोनिधि का कच्छप अवतरित हो चुका है

विश्वशांति

आदि अराध्य,
जीवन श्रेय,
इति नव जीवनाथ

अणुशक्ति आराध्य,
सजनात्मक धमयुद्ध श्रेय,
आण्विक विध्वंस अनादि अंत

आण्विक युद्ध का मोहग्रस्त अर्जुन आराध्य,
द्वन्द्व के बावजूद युद्धरत भीष्म,
और विजय के बाद परितापी युधिष्ठिर
नौटंकी के स्क्रिप्ट के बाहर

घूंघट का पट

सीता का श्राप
कि फल्गु की रेत की सतह पर
पानी दुलभ
पर सायास रुचि से
अजश्र स्रोत का प्रश्रवन सभव है

गाव की दुलहन
चदनवन का चाद होती है
सम्मोहक नयनो से विद्ध होने के लिये
घूंघट का पट
पिया को ही खोलना होता है

परिशिष्ट



शीर्षकवार टिप्पणियाँ

परिपूर्ण शृंग

हिंदू मिथकों में कई पर्वतों की कल्पना है मानसरोवर से उत्तर हिमालय का कैलाश शिखर जिस पर शिव, और कुबेर का भी, आवास है, भूमंडल की नाभि या केंद्र में मेरु या सुमेरु जिस पर बैकुंठ या स्वर्ग बना है, तथा मंदराचल जिसमें देवों और दानवों ने समुद्र मंथन किया 'शतपथ ब्राह्मण' में कथा है कि सत्युग या आदियुग में प्रलय प्लावन में विनष्ट वस्तुओं की पुनर्प्राप्ति के लिये विष्णु का कूर्मावतार हुआ और वे क्षीर सागर के तल में कच्छप बन कर मंदराचल के आधार के रूप में बैठ गये वासुकि सर्प को मंदर में लपेट कर देवों और दानवों ने समुद्र मंथन किया और चौदह तत्त्व प्राप्त किये अमृत, धन्वंतरी, लक्ष्मी, सुरा, चंद्र, रंभा, उच्चैःश्रवा, कौस्तुभ, पारिजात, सुरभि, ऐरावत, शंख, धनुष और विष 'ऋष्य शृंग' नाम का कश्यप गोत्र का एक ऋषि भी हो गया है जिसका जन्म 'रामायण' और महाभारत' के अनुसार एक मृगी से हुआ था। किशोर वय तक उसका पालन पोषण जंगल में हुआ और तब तक उसने किसी अन्य मानव का संपर्क नहीं पाया था। उसका विवाह अंग के राजा लोमपद की कन्या शांता से हुआ।

अंग्रेजी शब्द 'unicorn' से भी प्रेरित, जिसका तात्पर्य उस एकशृंगी प्राणी से है जिसके बारे में कल्पना है कि उसके पैर मृग के, पूंछ शेर के, शिर और धड़ घोड़े के होते हैं उसका शृंग आधार में श्वेत, मध्य में श्याम, तथा नोक पर लाल है। शरीर से एकशृंगी सफेद है और उसका शिर लाल तथा आँखें नीली हैं मध्ययुगीन यूरोपीय अनुश्रुतियों के अनुसार एकशृंगी को उसके अड्डे पर सिर्फ अक्षत योनिका रख कर ही पकड़ा जा सकता था, कन्याकुमारी को देख वह अपनी हिंस्र उग्रता छोड़ उसके कदमों में शांत लेट जायगा इसे ईसा मसीह की प्रतीककथा बताया जाता है जिन्होंने स्वेच्छा से कुमारिका मरियम के गर्भ में प्रवेश कर जन्म लिया था

स्रोत (1) John Dowson, A classical Dictionary of Hindu Mythology and Religion, Geography History, and Literature (Calcutta Rupa & Co, 1982 apparently a

reprint of the book first published Sometime in the last century)

(2) E Cobham Brewer, the Dictionary of Phrase and Fable (New york Avenel Books, 1978)

नीचे की कुछ और टिप्पणियो के श्रोत भी यही दो सदर्भ ग्रथ हैं

गरुड

रेवति राजा रैवत की दुहिता और बलराम की सहधर्मिणी, जिसे अत्य धिक उत्तुग पाकर विष्णु के अशावतार बलराम ने अपने हल के फाल से ह्रस्व बनाकर उससे शादी की

किसान शब्द का पर्यायवाची 'रैयत' (विशेषत पट्टाधारी किसान) भी इसी मूल से आया शब्द प्रतीत होता है

सास्कृतिक क्राति

ससकैचवन कनाडा की उत्तरी ससकैचवन नदी जिसके तटो पर एड-मटन बसा है

प्रतीक्षिता

"चलचित्र पर भीड का पूर्वाग्रही अपतत्रक उन्माद" मे विलियम वेल-मन के अमरीकी 'वेस्टर्न' फीचर फिल्म 'The Ox-Bow Incident' (1943) की छाया है

बालारुण

अरिस्टार्कस (लगभग 280 से 264 ई० पूर्व) प्राचीन यूनानी भौतिक-शास्त्री पाइथागोरियो ने कल्पना की थी कि सृष्टि के केंद्र मे अग्नि है, पर सर्वप्रथम अरिस्टार्कस ने वैज्ञानिक सकल्पना के रूप मे यह प्रस्ताव रखा कि सूर्य ही वह केंद्र है जिसके इर्द-गिर्द पृथ्वी और अन्य ग्रह चक्कर काटते हैं

विज्ञापन

प्रथम दो पक्तियो मे 1930 तथा 1940 के दशको मे 'चाँद' (इलाहाबाद

मासिक) मे अक्सर प्रकाशित एक विज्ञापन का उद्धरण है

'क्लब ऑफ रोम' मे उस अतर्राष्ट्रीय अध्ययन की ओर सकेत है, जिसकी शुरुआत 1970 के ग्रीष्म मे मैसाच्युट्स इस्टिच्यूट ऑफ टेकनॉलजी मे हुआ और जिसके रिपोर्टों मे यह विश्लेषण है कि मौजूदा आर्थिक और जनसाख्यक विकास की दर से इस ग्रह पर जिस भूमडलीय सिस्टम मे मानव रह रहा है वह ससाधनो के शेष हो जाने के कारण ई० सन् 2100 से ज्यादा दिनो तक नही चल पायगा

रॅल्फ नेडर उपभोक्ताओ के हितो की रक्षा के लिये चलाये गये आदोलन का अमरीकी नेता जिसने बहुराष्ट्रीय उत्पादक कपनियो के दोषपूर्ण उत्पादनो तथा भ्रामक विज्ञापनो के खिलाफ सघर्ष का आयोजन किया है

'उत्तर-दक्षिण' से अतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण आर्थिक वार्तालापो तथा समझौतो से तात्पय है।

'मिडाज', फ्रीजिया का राजा जिसने ईश्वर से वरदान मागा कि वह जो भी छुये सोना बन जाये लेकिन जब उसने पाया कि वह खाने के लिये जो भी उठाता है वह सोना बन जाता है तो उसने पॅक्टोलस नदी मे स्नान कर इस वरदान से मुक्ति पायी उसके स्नान के उपरात वह नदी स्वण बालुका पर बहने लगी

बोनसाई—वामपथी गमले मे

बोनसाई प्राय गमले मे लगाया गया एक लोकप्रिय लघु आकारीय जापानी पौधा है

मानसरोवर

डेनमार्क का राजा कॅन्यूट, जिसके इग्लैंड पर विजय पर उसके दरबारियो ने उसे प्रसन्न करने की नीयत से यह कहना शुरू किया कि उसकी शक्ति की महिमा ऐसी है कि वह जो चाहे कर सकता है उन्हे मुतर्क की राह पर लाने के लिये कॅन्यूट ने आदेश दिया कि उसका सिंहासन समुद्रतट पर लगाया जाय, वहाँ उसने सागर की लहरो को आदेश दिया कि वे वापस लौट जायें पर लहरो ने स्वय लौटने के बजाय सम्राट को ही पीछे हटने पर मजबूर कर दिया

आलेख्या

दीपंक तथा इस कविता की बहुरूपदर्शी छवियाँ हैदराबाद मे अखिल

भारतीय राजनीति विज्ञान सम्मेलन के दौरान आलेख्या नरसिंह राव के अविस्मरणीय नृत्यो तथा कुछ तरुणो द्वारा प्रस्तुत भीति और विस्मय जनक ताडव नृत्य के प्रति एक तृप्त दर्शक का आकुल कृतज्ञता-ज्ञापन हैं

नागरिक

कविता की पृष्ठभूमि 1985 के वसत मे दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्रीराम कालेज मे जनजागरण और राजनीतिक लामबदी पर आयोजित एक सगोष्ठी है, इसका मुख्य सदेश 'दक्षिण' और 'वाम' के बीच मिटते अतरो की ओर सकेत करना है

उतथ्य अगिरस गोत्र का ऋषि जिसने सोम की पुत्री भद्रा से विवाह किया वरुण, जो भद्रा से मोहित था, उसे ले भागा और नारद के बीच-बिचाव के बावजूद भद्रा को उसने वापस करने मे इनकार कर दिया। क्रुद्ध उतथ्य ने सपूर्ण सागर पी डाला, वरुण का सरोवर भी उसकी इच्छा के अनुसार सुखा डाला गया, और अतत देशो और सरस्वती नदी का आह्वान करते हुये उतथ्य ने प्रार्थना की कि सरस्वती मरुस्थल मे लुप्त और देश अपवित्र हो जाय तब जाकर वरुण ने भद्रा को वापस किया

पुलस्त्य ऋषि जो ब्रह्मा का मानस पुत्र और प्रजापतियो मे से एक था, वह विश्रवस, कुबेर, तथा रावण का पिता था और सभी राक्षस उसके वश माने जाते है

प्रियव्रत ब्रह्मा और शतरूपा के दो पुत्रो मे एक, अथवा दूसरे श्रोतो के अनुसार मनु स्वयम्भू का पुत्र 'विष्णुपुराण' के अनुसार उसकी पत्नी कर्दम की पुत्री काम्या है जिससे उसे दस पुत्र और दो लडकिया हुइ 'भागवत पुराण' मे कथा है कि इस बात से असतुष्ट होकर कि पृथ्वी का आधा भाग ही एक बार क्यो प्रकाशित होता है उसने सूर्य को अधकार के पूर्ण खडन के लिये बाध्य करने के लिये अपने अग्निरथ मे पृथ्वी के चारो ओर सूर्य का सात बार पीछा किया अतत ब्रह्मा ने उसे रोका

कुशस्थली आनर्त के राजा रैवत द्वारा निर्मित राजधानी जिसका अन्य नाम द्वारका है राम के पुत्र कुश द्वारा विंध्यशिखर पर निर्मित दक्षिण कोशल की भी राजधानी

पडोरा जब प्रोमिथियस ने स्वर्ग से अग्नि चुरा अपने द्वारा निर्मित

प्रतिमा मे जान डाली तो जुपिटर ने रोमन अग्निदेव वलकन से कह कर बदला लेने के लिये एक नारी मूर्ति वनवायी और उसे एक मजूषा दिया जो वह विवाहोपरात अपने पति को देने वाली थी शकालु प्रोमिथियस तो बच निकला, पर उसके भाई एपिमिथियस ने पैडोरा पर मोहित होकर उससे शादी कर ली जैसे ही दूल्हे ने पैडोरा का बक्स खोला उसमे से अनिष्ट निकले और चारो ओर फैल गये उस बक्स मे से निकलने वाली अतिम वस्तु आशा थी

इद्रधनुष

कविता की पृष्ठभूमि कनाडा के अलवर्टा प्रात की राजधानी एडमटन मे शरत् का आगमन है 'भारतीय आदिराजा' मे तात्पय वहाँ के एक आदिवासी इडियन नायक से है जिसकी आगामी शीत की कडक के बारे मे हर साल भविष्यवाणी दैनिक 'एडमटन जनरल' मे प्रकाशित हुआ करती थी

गुलाबी रेणुकाश्म रेड सैंडस्टोन, जिसका नयी दिल्ली के स्थापत्य पर स्पष्ट प्रभाव है

आकाश मथन

औदवर यम का एक नाम है

विश्वशाति

'नौटकी' विहार, और सभवत अन्य हिदी-भाषी राज्यो, मे एक लोक-नाटय की शैली है

सीमा

निमि इक्ष्वाकु का पुत्र और मिथिला के राजवश का सस्थापक वशिष्ट ने उसे श्राप दिया कि वह अपना भौतिक रूप खो दे, प्रत्युत्तर मे यही श्राप निमि ने ऋषि को दे डाला बाद मे वशिष्ट का पुनजन्म मित्र और वरुण की सतान के रूप मे हुआ, पर निमि के शरीर को सुगध्य तलो और गध के सलेपन से अमरत्व की सपूर्णता के सादृश्य मे सुरक्षित रखा गया निमि शरीर और आत्मा के त्रासद विलगाव के अनुभव को फिर झेलने के डर से पुनर्जन्म के लिये तैयार नही हुआ 'विष्णुपुराण' के अनुसार देवो ने निमि की इस इच्छा का समादर उसे प्राणियो की आखो मे निर्निमेष के रूप मे अमर करके किया

ययाति चद्रवश का पचम राजा और नहुप का पुत्र। उसकी दो रानियो देवयानि और शर्मिष्ठा से क्रमश यदु और पुरू के जन्म हूये जिनसे यादव और पुरूरवा वशो का विस्तार हुआ। ययाति के कुल पाच पुत्र हूये, अन्य तीन पुत्र थे द्रुह्‌यु, तुरवसु, और अनु। ययाति मदन-वृत्ति का था, और देवयानि से दापत्य-च्युति के कारण उसके पिता शुक्र के श्राप से वह वृध्य और दुर्वल हो गया। शुक्र इस श्राप को ययाति के किसी राजी पुत्र पर अतरित करने के लिये तैयार हो गया। मिफ पुरू अपने पिता के पक्ष मे अपने युवावस्था से त्यागपत्र के लिये तैयार हुआ। ऐंद्रिय सुखो के हजारवर्षीय कामाहुति के उपरात ययाति ने काम से स‍्यास लिया और अपनी ऊर्जा पुरू को समर्पित कर उसे अपना उत्तराधिकारी वना दिया।

००

   
    
   

   
      
    

   
 
  



महेन्द्र प्रसाद सिह

जन्म 2 फरवरी 1942, बिहार म गया जिले के ओकरी गाव म

परदादा पराक्रम ठाकुरबाडी स्थापना

बाप पितिया पराक्रम स्कूल और कॉलिज

स्वक्रम 'कागद कोर' और 'लुकाठी' से खिल वाड

शिक्षा दीक्षा पटना और अलबर्टा (कनाडा) विश्वविद्यालयो म

वृत्ति 1981 से दिल्ली विश्वविद्यालय मे राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर तथा 1984 मे विभागाध्यक्ष इसके पूर्व मगध विश्वविद्यालय, बोधगया मे अध्यापन तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसधान परिषद नयी दिल्ली म निदेशक

प्रकाशन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर दो शोधग्रथ तथा भारतीय राजनीति और राजनीति, सिद्धान्त व शोध विधि पर सीमिया पर्चे कविता के क्षेत्र म 'मूर्धारोहण' प्रथम प्रकाशन